International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-12-2024, Accepted: 15-01-2025, Published: 30-01-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 29-31

भूमंडलीकृत चक्रव्यूह में पिसता किसानः 'बीज भोजी' कहानी के संदर्भ में

डॉ. श्रीविद्या एन. टी[1], अन्जू सी[2]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ़ संस्कृत, कालटी, केरल, भारत
[2] हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालटी, केरल, भारत

सारांश
भारत एक कृषि प्रधन देश है इसलिए भारत की जनता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कृषि से जुड़े हुए है। कृषि कार्य करनेवाले को मुख्य रूप से किसान कहा जाता है उन्हें कृषि कोई धंधा नहीं, उनकी जीवन शैली है, कोई व्यापार–व्यवसाय नहीं बल्कि उनका जीवन का हिस्सा है। किसान ने ही देश को देश बनाया था लेकिन अब वह सब कुछ खोकर नाम मात्र रह गया। भूमंडलीकृत समाज में किसान की शोषण एवं आत्महत्या ही अधिक सुनना पड़ता है। किसान आत्महत्यायें असल में कृषि क्षेत्र की यथार्थ स्थिति को व्यक्त करता है, संपन्न कहने वाला किसान की संपन्नता भी खोखली है। आज किसानों को घर की खाद की बजाय बाज़ार की खाद और घर की बीज के स्थान पर बाज़ार की बीज ही मिल रहे हैं। इन बीजों को बाज़ार में माँग बढ़ने के कारण दूकानदारों ने अपनी मन चाहे कीमत पर उसे बेच देते हैं। इस प्रकार भूमंडलीकरण अपनी रणनीति फैलाकर किसानों को मिटाते आ रहे हैं यह बात चिंतनीय है।

मूल शब्दः भूमंडलीकरण, किसान, महंगाई, पलायन, कर्ज, आत्महत्या, गरीबी, भ्रष्टाचार

भूमंडलीकरण का शाब्दिक अर्थ है 'भू' का मंडीकरण जिसे वैश्वीकरण, जगतीकरण, नवपश्चिमीकरण, ग्लोबलाईज़ेशन आदि भी कहा जाता हैं। भूमंडलीकरण की मूल भावना 'वसुधैवकुटुम्बकम्' पर आधारित है, जिसमें पूरी वसुधा यानी धरती को एक कुटुम्ब मानते हैं। व्यापार, संचार, प्रौद्योगेकी और अवागमन के माध्यम से विश्व का एकीकरण भी इसमें शामिल है। इस प्रकार भूमंडलीकरण एक ऐसी आर्थिक ढाँचा है जिसमें दुनिया भर के लोग, देश, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और समाज आपस में अधिक जुड़ते जा रहे हैं। वर्तमान समय में इसने एक ओर व्यापार और अर्थव्यवस्था को विस्तार दिया, वहीं दूसरी ओर किसानों को एक जटिल चक्रव्यूह में फंसा दिया। जिसके संबन्ध में कमल नयल काबरा का कथन है–

"आज जिसे भूमंडलीकरण, जगतीकरण, नवसाम्राज्यवाद, विश्वपूँजीवाद, विश्वव्यापी बाज़ारीकरण, नवउदारवाद की विस्फोट आदि नामों में जाना जाता है, जिसने केवल आज का यथार्थ माना जाता है बल्कि उसे आज के विश्व की विकल्पहीन, अपराजेय और अपरिवर्तनीय नियति बताया जा रहा है, उसे वास्तव में विश्वव्यापी कुविकास अथवा मानवता की उपलब्धियों के दूरुपयोग की दर्दनाक दस्तां के रूप में देखा जाना चाहिए।"

भूमंडलीकृत चक्रव्यूह एक जाल की तरह है, जहाँ किसान अपनी फसलें, कर्जों, मौसम और सरकारी नीतियाँ के बीच फंसे हुए हैं। जिसमें घुसना आसान था, लेकिन बाहर निकलना दिन–ब–दिन कठिन होता जा रहा है।

भारतीय संस्कृति कृषि पर निर्भर है इसका आधार स्तंभ है किसान, जो अकूत परिश्रम करके जीवन बिताते आ रहे हैं। लेकिन कृषि एवं किसानें की स्थिति अब बद से बदतर हो गया है। पहले कृषि प्रधान देशों में पूँजीपतियों अपनी स्थिति सुदृढ़ करने में व्यस्त था, लेकिन आज बाज़ार की प्रतिद्वंद्विता में भारतीय फसलों का अस्तित्व नष्ट होते आ रहे हैं, जिसकी प्रभाव पूरी समाज में भी पड़ने वाले हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि क्षेत्र घटता आ रहा है उसका विभाजन दिन प्रतिदिन बढ़ता है इसी से कृषि क्षेत्र को विस्तृत करना असंभव है। कृषि क्षेत्र छोटा होने से मशीनों का उपयोग भी किसानों को लाभदायक नहीं होता। अब कृषि व्यवसाय के अतिरिक्त संघर्ष का क्षेत्र बन गई है, जिसमें किसान अपनी आजीविका, अधिकार एवं आत्मसम्मान के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। कृषि क्षेत्र में मौजूदा परिस्थितियाँ में किसान खुद को भूमंडलीकृत चक्रव्यूह में फंसा हुआ पाता है,उनकी आत्महत्या की घटनाएं भी इसी चक्रव्यूह का ही हिस्सा है।

भूमंडलीकृत चक्रव्यूह में फंस गए किसान की संघर्षमय गाथा व्यक्त करती गौरीनाथ की कहानी है 'बीज–भोजी'। जिसमें आधुनिक किसान की दुख–भरी हालत को दर्शाया है। किसी भी खेती का आधार है बीज। जो अब किसानों के नियंत्रण से बाहर होते जा रहे हैं। ऐसे होने से भविष्य में किसानों को उच्च कीमतों पर बाज़ार से बीज खरीदना पड़ेगा, जिससे पूरे भारत को आर्थिक संकट का भी सामना करना पडेगा। कहानी का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है, 'बीज–भोजी' अर्थात बीज को खाने वाला। किसान अपनी धन के समान संजोकर रखे बीज उसकी आगमी भविष्य को सुदृढ़ बनाते हैं। लेकिन इस बीज को खा जाने वाली राक्षसी शक्तियाँ हमारे समाज में आज भी मौजूद है। जिसे हम भूमंडलीकरण भी कहा जा सकता है। कहानी में माला और देव पति–पत्नी एवं किसान परिवार का है जो अपनी बीज का संरक्षण करने केलिए तड़प रहे हैं। गाँववालों की पूरी नज़र उनपर है जो किसी न किसी रूप में उसे हासिल करना चाहते हैं। माला यहाँ सशक्त रूप में उभर आती है जब अपनी बेटा मुन्ना की मृत्यु होता है, पति ने आत्महत्या की जाती है फिर भी वह किसी को अपनी बीज छूने तक नहीं देती। मृत्युपरांत बीज लेने का कार्यक्रम चलाते वक्त वह आक्रोश करती है–

"कोई मेरा बीज नष्ट करना चाहेगा, सो कैसे होगा? आइए! हम सबको भी मार दीजिए सब मिलकर, तब जीम लीजिएगा भोज खूब छककर। जीते जी तो मैं बीज का धान किसी को छूने भी नहीं दूँगी।" पारंपरिक खेतों में किसान अपनी बीज स्वयं तैयार करते थे लेकिन अब ऐसा नहीं इसलिए यहाँ माला की विद्रोही दिल जाग उठती है। लेखक यहाँ बदलने वाले समय को भी दर्शाया है। भूमंडलीकृत युग ने बाज़ार में हाईब्रिड बीज उपलब्ध कर दिया है जिसके कारण पारंपरिक बीजों की मांग कम होंगा और किसान उन बीजों को संरक्षण नहीं कर पाओंगे।

हाईब्रिड बीजों की कीमत पारंपरिक बीजों की तुलना में काफी अधिक होती है। किसान इन्हें खरीदने केलिए अधिक पैसा भी खर्च करना पड़ता है। इसके अलावा इन बीजों के साथ विशेष उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग आवश्यक होता है, जो

खेती की लगत को और बढ़ाता है। हाईब्रिड बीजों का उपयोग करने से किसान अब कंपनियों पर निर्भर हो गए है। हर साल उन्हें नये बीज खरीदना पड़ते हैं क्योंकि हाईब्रिड बीज से उगाई गई फसल के बीज को अगली बार उपयोग नहीं किया जा सकते। यह किसानों की आत्मनिर्भरता को समाप्त कर रही है। हाईब्रिड बीजों के अधिक उपयोग से स्थानीय फसलों की विविधता को नुकसान हो रहा है, जो लंबे समय में कृषि प्रणाली की स्थिरता के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। पारंपरिक फसलों की जगह एक ही तरह की हाईब्रिड बीज उगाने से पर्यावरण असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।

आज के समय में प्रमुख समस्या है महंगाई, बढ़ती महंगाई किसानों की परेशानियों को कई गुना बढ़ा दिया है, जिससे उनका जीवन कठिनाइयों से भर गया है।खेती की लागत लगातर बढ़ रही हैं, बीज, खाद, कीटनाशक और ईंधन की कीमत आसमान छू रही है, लेकिन किसान की आय में कोई खास बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है। किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाता और मंडियों में बिचौलियों के हावी होने से उनकी मेहनत का मोल और भी कम हो जाता है। महंगाई की विशेषता यह है कि आज के किसानों को पुराने समय की किसानों से ज्यादा सुविधा प्राप्त है। आज 99 प्रतिशत किसानों के पास सिंचाई के लिए बोरिंग या ड्यूबवेल उपलब्ध है, खेती करने के लिए ट्राक्टर, हारवेस्टर आदि है। लेकिन बढ़ती महंगाई से किसान तड़प रहे हैं। कहानी में सुकेश का कथन है–

"अरे भाई डीज़ल इस बार भी ऊपर ही जा रहा है। पेट्रोल पम्प पर रोज़–रोज़ मिलती भी नहीं। यहाँ बाज़ार में चोरौआ प्रति लीटर पाँच रुपए ज़्यादा पर बिक रहा है। यूरिया तो प्रति बोरी साठ रुपए उछल गई है।"

इस प्रकार महंगाई किसान जीवन और उनकी आजीविका पर सीधा प्रभाव डालती है। किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने केलिए उन्हें पर्याप्त सहायता और संसाधन उपलब्ध कराना अनिवार्य है, ताकि वे न केवल महंगाई का सामना कर सकें बल्कि देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

भारत में किसान का पलायन एक जटिल और गंभीर समस्या बन चुकी है, जो न केवल किसानों के जीवन पर बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और कृषि पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। किसान मुख्यतः अपने गाँवों से पलायन कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें खेती में लगातर बढ़ती कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। कृषि क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ जैसे जलवायू परिवर्तन, सूखा, बाढ़, कीटनाशकों का दुष्प्रभाव और फसल की कम उपज किसानों को मजबूर कर रही है। किसान पलायन करने के बाद शहरी क्षेत्रों में जाकर छोटे–मोटे काम करने की कोशिश करते हैं, लेकिन अक्सर वहाँ भी उन्हें बेहतर रोज़गार के अवसर नहीं मिलता। इससे उनकी आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ जाती है। डॉ.वर्षा मिश्रा के अनुसार

"गरीब किसान आजीविका की खोज में शहर की ओर भागता है, यह सोचकर कि वहाँ उसकी दशा में सुधार होगा, लेकिन शहर में भी शोषण की चक्की चलती देखकर वह हैरान हो जाता है।"

कई बार उन्हें सस्ते श्रमिक के रूप में काम करना पड़ता है जिससे उनकी मेहनत का भी कोई मूल्यांकन नहीं होता। यह स्थिति न केवल व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करती है बल्कि अस्थिरता और असंतोष पैदा करती है। कहानी में बैजू इसी सोच में है लेकिन वह शहर नहीं जा पाया। अपनी घर की हालत समझकर देव जी भी दिल्ली पहूँचाता है और फिर घर लौट आता है। कहानी में सत्यनारायण अपनी अनुभव व्यक्त करता है–

"गेहूँ क्या, किस खेती में लाभ है? सब फसल की हालत उन्नीस–बीस ही है। बस नार–पुआल और भूंस का आसरा! फिर एक अनमनी कि खेती कर रहे हैं। न तो..."

किसान अक्सर अपने खेतों में बुआई, देखभाल और फसल कटाई के लिए अवश्य पूँजी जुटाने में कठिनाई को सामना करते हैं, इससे कर्ज लेना अनिवार्य हो जाता है। अधिकांश किसान अपनी फसल उगाने के लिए साहूकारों से कर्ज लेता है, क्योंकि उसे बैंकों से ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। कर्ज लिए पैसे का ब्याज अधिक होने से किसान कर्ज में डूब जाते हैं। प्राकृतिक आपदाएं और अन्य कारणों से अपने कर्ज चुकाने में किसान असमर्थ होते हैं। इस स्थिति में किसान सामाजिक कलंक और मानसिक दबाव का सामना करना पड़ता है। कर्ज की बोझ से किसान आत्महत्या की स्थिति भी अब बढ़ रहे हैं, जो भारतीय कृषि की स्थिरता को प्रभावित कर रही है। देव जी के परिवार वालों जब कोख भरने केलिए तड़प रहे थे तब अन्य लोगों ने उसे कर्ज लेने की बात करते हैं–

"लोगें ने बैल के नाम पर कर्ज लेने का सुझाव दिया। मगर दूध के जले थे वह! पंद्रह वर्ष पहले बैंक के क़र्ज़ पर जोड़ा बैल ख़रीद चुके थे वह। छह हज़ार के क़र्ज़ में नौ हज़ार जमा करने के बाद भी बैल बेचने पड़े थे।"

इस प्रकार कर्ज किसान का मूलभूत समस्या बन चुकी है आज भी किसान कर्ज का मूल भी नहीं चुका पा रहे हैं, उनके पास सिर्फ अपना मेहनत ही बचा हूआ है।

भूमंडलीकरण किसानों के लिए विकास एवं प्रगति का द्वार खोला है वही उसकी गरीबी का महत्वपूर्ण कारण भी बन गया। वैश्विक बाज़ार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने की कारण फसलों का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। इसके साथ ही आधुनिक कृषि तकनीकों और रसायनों पर बढ़ता खर्चों में वृद्धि कर दी है। प्राकृतिक आपदाओं के साथ सरकार की ओर से मिलनेवाली मदद और सब्सिडी भी अधिकांश समय अपर्याप्त रहती है, जिससे किसानों का संकट और गहरा हो जाता है। शहरीकरण, तेज़ रफ्तार और औद्योगीकरण के कारण जैसे–जैसे कृषि भूमि घट रही है, वैसे–वैसे किसानों के पास कमाई के सीमित साधन बचते जा रहे हैं। कहानी का अंश है–

"वैसे देव जी कभी अच्छे–खासे किसान परिवार के सुखी–संपन्न नागरिक हुआ करते थे। दस एकड़ ज़मीन, गाछ–वृक्ष, जोड़ा–बैल–सब कुछ था उनके पास। माँ–बाप के अलावा छोटा भाई और छह बहनों का भरा–पूरा परिवार था। मगर बहनों की शादी कराते–कराते घर की हालत पस्त हो गई थी। काफी संपत्ति उन प्रयोजनों में बिक गई थी। " यहाँ देव जी संपन्न परिवार के होते हुए भी धीरे–धीरे गरीबी की ओर अग्रसर है।

भूमंडलीकरण के कारण कई बड़े बड़े कॉपरेट और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कृषि क्षेत्र में उतर आई है। कृषि के बढ़ते व्यवसायीकरण और महंगे कृषि साधनों ने किसानों के ऊपर आर्थिक बोझ बढ़ा दिया। किसान अपनी समस्याओं से इतने घिर जाते हैं कि उन्हें आत्महत्या के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखाई देता। कहानी में सुकेश ज़हर पीकर आत्महत्या कर देता है जब पुलीस आते तो एक युवक अपनी विरोध प्रकट करता है–

"काका जी, कराने दीजिए इन्हें पोस्टमार्टम। ज़हर पिया, आत्महत्या की आखिर ऐसा क्यों किया उसने सरकार की तरफ से हम पर थोपे गए कंपनीवाले बीजों के कारण बर्बाद हूई फसल की चिंता में सरकार और सरकारी कारनामों की पोल खुलेगी।"

बड़े बड़े कंपनियाँ अपनी ताकत बढ़ाकर देशों में हाईब्रिड और जेनिटिकली मॉडिफइड बीजों का प्रचलन किया है। जिसके बीजों की गुणवत्ता और विपणन की नीतियाँ भी सवालों के घेरे में है। कभी –कभी कंपनियाँ यह दावा करती है कि इन बीजों से अधिक उपज होगी, परंतु वास्तविकता में एसा नहीं होता। जब फसलें अपेक्षा के अनुरूप परिणाम नहीं देतीं, तो किसानों को भारी वित्तीय नुक्सान होता है।

किसानों की हित की रक्षा के लिए बनाई गई योजनाएँ और नीतियाँ अक्सर सरकारी अधिकारियों और बिचौलियों के भ्रष्ट

आचरण की शिकार होती हैं। सरकार सब्सिडी, कर्ज माफी और अन्य सहायक योजनाओं का लाभ गरीब और ज़रूरतमंद किसानों तक पहूँचने से पहले भ्रष्टाचार के जाल में फंस जाता है। कई बार किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता, व्यापारी उनसे बहूत मुनाफा कमाते हैं। कृषि क्षेत्र में बढ़ती निजीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की घूसपैठ ने भी किसा नों की स्थिति कमज़ोर किया है। इस भ्रष्टाचार के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति लगातर बिगड़ती जा रही है, जिससे वह कर्ज एवं आत्महत्या जैसे गंभीर संकटों का सामना करने को मजबूर हो जाते हैं। प्रस्तुत कहानी में अपनी फसल खराब हो जाने से आत्महत्या की गई सुकेश को अधकारी वर्ग साथ मिलकर उसे स्वाभाविक मौत बनाना भी भूमंडलीकृत समाज की रणनीति है।

"क़रीब बीस–पच्चीस मिनिट बाद टोले के बाहर गए दोनों जनें श्याम बाबू के साथ वापस आए। श्याम बाबू के साथ दारोगा की विशेषण मंत्रणा क़रीब दस मिनिट में संपन्न हुई। दारोगा की तरफ़ श्यामबाबू ने पाँच सौ करारे नोट बढ़ाए।"

किसानें की आत्महत्याओं को स्वाभाविक मौत बनाने और उन पर पर्दा डालने वाली भ्रष्ट व्यवस्था हमारे समाज के लिए एक गंभीर समस्या बन चुकी है। जब किसान कर्ज, फसल के नुकसान, और सरकारी योजनाओं की आसफलताओं के चलते आत्महत्या करते हैं, तो एसी घटनाओं को दबाने के लिए कुछ भ्रष्ट अधिकारी और दलाल अपनी जेबें भरने में लगे रहते है। यह भ्रष्ट व्यवस्था न केवल किसानों की समस्याओं को अनदेखा करती है, बल्कि उनकी मौतों को स्वाभाविक दिखने की कोशिश भी करती है। ऐसे मामले में पीडित परिवारों को पैसा देकर या धमकी देकर सब कुछ छुपाया जाता है।

निष्कर्ष

भूमंडलीकृत चक्रव्यूह में फंसे किसान और गंभीर संकट का सामना कर रहा है। वैश्वीकरण और उदारीकरण के चलते कृषि क्षेत्र पर बड़ी कंपनियों का प्रभुत्व बड़ रहा है, जिससे छोटे और मझौले किसान आर्थिक रूप से कमज़ोर होते जा रहे हैं। कर्ज में डूबे किसान आत्महत्या जैसे कठोर कदम उठाने को मज़बूर हो रहे हैं। किसानों को भूमंडलीकृत चक्रव्यूह से बाहर निकालने के लिए ज़रूरी है उन्हें सही जानकारी, तकनीकी और तकनीकी तक पहूँच प्रदान किया जाए, जिससे आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त बन सके।

संदर्भ सूची

1. कमल नयन काबरा, भूमंडलीकरण विचार नीतियाँ और विकल्प, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005, पृ.
2. गौरीनाथ, बीज–भोजी, अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, 2017, पृ.
3. वही,
4. डॉ.वर्षा मिश्र, मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ, क्वालिटि बुक्स,कानपूर, 2004, पृ.89
5. गौरीनाथ, बीज–भोजी, अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, 2017, पृ.88
6. गौरीनाथ, बीज–भोजी, अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, 2017, पृ.
7. वही
8. वही, पृ.105
9. वही, पृ.106